YOUNG RESEARCHER
ISSN: 2277-7911 Impact Factor: 5.077 (SJIF 2021)
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal
Volume - 12, Issue - I, Jan-Feb-March 2023

खगडिया जिला के कृषि पर बढती जनसंख्या का प्रभावः एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

सहायक प्राध्यापक, रामेश्वर सिंह टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, गया.

Corresponding Author: डॉ. सुरेन्द्र कुमार

DOI - 10.5281/zenodo.8343914

सारांश:

आज वर्तमान समय में बढ़ती जनसंख्या एक चुनौती स्वस्प है। विश्व जनसंख्या में भारत वर्तमान समय 2023 में विश्व का पहला देश बना है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भातर सातवाँ (2.42 प्रतिशत) स्थान पर है भारत देश में बिहार में उत्तर प्रदेश महाराष्ट्र के बाद तीसरा स्थान पर आता है। शिक्षा के दृष्टि से बिहार भातर में 28 वॉ स्थान रखता हें आज आजादी के 77 सालों में कृषि का विकास पूर्ण रूपेन नहीं हो पाया है। बिहार में खगड़िया जिला गंगा नदी के उत्तर में अवस्थित है। जो बाढ के क्षेत्रों से प्रभावित होता है। गंगा नदी बिहार को दो बराबर भागों में बाँट देता है। खगड़िया जिला 10 मई 1981 में पुराने मुगेर जिला से निकलकर बना हैं यहाँ की आबादी 2011 में 1686880 व्यक्ति थी । यह एक कृषि प्रधान जिला हैं, जहाँ आधारित उद्योग-धंधे का ही विकास हो पाया है। जिला में प्रमुखतः लघु एंव कुटिर उद्योगो का विकास हुआ है। लेकिन फ्रुट तथा पैजीटेवल प्रोसिंग उद्योग के विकास की काफी संभावनाएँ उपलब्ध है। यहाँ इससे संबंधित आधरभूत संरचना का अभाव नहीं है। इससे कृषको को अधिक आय तथा प्रादेभिक विकास होगा। उद्योगो के विकास का प्रभाव पर्यावरण पर स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

परिचयः

आज जनसंख्या प्रगति से बढ रही है। भू-भाग सीमित है। बढती जनसंख्या के अनुसार मांग बढ रही है उत्पान बढ़ोतरी के लिए तकनीकी रासायनिक ऊवरको का प्रयोग बढ़ा है। जिसका सीधा असरपर्यावरण पर पड़ रहा है। औधोगिक विकास से प्रदेश विशेष की आर्थिक विकास होती है। हजारों लोगो को जीविको पार्जन के साधन उपलब्ध होते है। उद्योगो के महत्व के कारण ही इसे Engine of economic growth कहा जाता है। यह जिला गंगा नदी के उत्तर में स्थित है। उसका क्षेत्रफल 1485,8 वर्ग किलोमीटर है। जिसपर 2011 की जनसंख्या के अनुसार 16,66880 व्यक्तिनिवास करते थे। जिला का स्थल भाग समुद्रतल से उढ़यी (110 फीट ऊँची है।) जिला की भूमिअत्यधिक उपजाउँ (कॉप मिट्टी का) है। जो यहाँ प्रवाहित सात नदियों (गंगा सहित) द्वारा निर्मित है। प्रधान उत्पादित फसल चलर, गेहूँ मक्का, तेलहन तथा सब्जियाँ फल तथा फूल है। इस जिला में दो अनुमण्डल-खगडिया तथा गोगरी तथा

इसके अन्तर्गत सात प्रखण्डों है। यहाँ शुद्ध बोया गया क्षेत्र 70 प्रतिशत है जिला सड़क मार्ग, रेलमार्ग तथा जल मार्ग से जुड़ा है।

बिहार राज्य अध्ययन क्षेंत्र में औद्योगिक विकास की दश अच्छी नहीं है। जिसका प्रधानकारण क्षेत्रका खनिज विहितन होना तथा भक्ति के संसाधनो का अभाव है। यहाँ यह उल्लेखनिय है क क्षेत्र में कृषि पर आधारित उद्योगो का भी बांधित विकास नहीं हो पाया है।

बढ़ती जनसंख्या में औद्योगिकरण और पर्यावरणीय अवनयन:

Growth population (Industrialization & Environment)

आधुनिक उद्योग का विकास का आरम्भ 19 वीं शताब्दी के महय औद्योगिक-क्रोति (Industrial Revolution) से आरम्भ हुआ अधिकाधिक उत्पादन के लिए नित्य नये प्रयोग, शोध तथा तकनीकी सुधारके द्वारा पश्चिमी देशों मे नई संस्कृति का उदय हुआ जिसे औद्योगिक संस्कृति (Industrial culture) कहा जाता है। मात्र एक सौ साल के अवधि में औद्योगिकरण उत्पादन में संलग्न देश विश्व के अग्रणी देश बन गये है। इस औद्योगिक विकास में अर्थिक सामाजिक जीवन के नये आयामों (Dimension) का निमार्ण किया जैसे नगरीकरण (Urbanization) द्रुत यातायात विकास (Fast Transport) व्यावसायिक कृषि (Commercial) व्यापारिक पशुपालन (Trade oriented husbandry) आधिकाधिक खनिज उत्खनन वनस्पति दोहन (Forest exploate) और भौतिक सुख आचारित समाज की रचना इस विकास के क्रम में मानन और प्रकृति की अर्न्तप्रक्रिया बदलती रही है। और अन्ततः प्रकृति के साथ मानव का संबंध इस हद तक बिगड़ने लगा कि औद्योगिक विकास की गति पर समस्याओं का द्योतक बन गयी ।हम जानते हे। कि प्रकृति अपने ढंग से पर्यावरण का नियम करती है। तथा उसके तत्वों की एक निश्चित सहन सीमा होती है। उत्पादन बढ़कर अधिक भौतिक सुख की अपेक्षा में औद्योगि समाज ने अपने जीवनदायी भौतिक तत्वों को प्रदुषित कर दिया है। औद्योगिक विकास (कृषि-उत्पन्न आधारीत भी) से बढ़वा से प्रदूषण प्राकृतिक संकट और प्राकुति समस्याएँ, न सिर्फ उनके लिए खतना उत्पन्न करने लगी है; बल्कि असमे सम्पूर्ण विश्व प्रभावित होने लगता है। "Both the components of industrial development eg. exploitation of natural resources and industrial production have created a number of lethal environmental degradation and ecological imbalance at global, regional and local levels in a variety of

wasy" औद्योगिक विकास के द्वारा उद्योगो में प्रयुक्त ऊर्जा (Energy) साधनों के अधिक उपयोग के कारण जहाँ साधनो के अधिक उपयोग के काण जहाँ संकट उत्पन्न हुआ है वहीं इनसे उत्पन्न कार्बन-डाइ आक्साइड गैस और ऐसी हजारों जहरीली गैसें और ठोस अपशिष्ट वातावरण को प्रदूषित कर रहे हैं, जिससे पारिस्थतिकी (Ecological) की समस्या उत्पन्न होने लगा है। वर्षा जल के साथ औद्योगिक अम्ल (Acid) वनस्पतियों को जलाने लगा है। फिर औद्योगिक उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए अधिकाधिक कच्चा माल, पर्याप्त परिवहन के साधन, श्रम, पूँजी, शक्ति के साधन और बाजार की आवश्कता होती है। परिवहन विस्तार के कारण ऊर्जा खपत दिनोदिन बढ़ती जा रही है। उद्योगों में कार्यरत श्रमिक अनेक विर्षलें प्रदूषकों से प्रभावित होकर अपना स्वास्थ्य दुर्बल कर रहे है। बाजार की खोज में औद्योगिक क्षेत्र आपसी स्पर्धा से तनाव की स्थिति उत्पन्न कर रहे है। और गरीब देशों/क्षेत्रो का शोषण कर रहे है। संक्षेप में औद्योगिक संस्कृति की विकृतियाँ समाज के समक्ष उलझन उत्पन्न कर हरीहै। इस प्रकार औद्योगिक प्रगतिने एक ऐसी मनोस्थिती (Psychology) उत्पन्न कर दी है, जो भस्मासुर की तरह स्वविनाश की ओर अग्रसर कर रही है।

तकनीकी विकास का पर्यावरण पर कुप्रभाव:

(Effects of technical development on environment)

तकनीकी विकास का प्रभाव आधुनिक सभ्यता पर स्पष्टतः दिखाई पड़ती है। आधुनिक तकनीकी सभी क्षेत्रों जैसे कृषि, उद्योग-धंधे, ऊर्जा उत्पादन, यातायात, युद्ध इत्यादि में प्रवेश कर गया है। मानव इनसभी क्षेत्रों मे सफलता प्रापत की हैं लेकिन इन सभी का पर्यावरणीय अवनयन पर कुप्रभाव पड़ता रहता है। ये सभी किस पर्यावरण अवनयन के स्रोत हैं। सी. सी. पार्क (C.C. Park, 1980) में उचित ही लिखा है कि "Environmental crisis is the inevitable result of a counter-ecological pattern of productive growth"

कृषि-क्षेत्र के कुप्रभाव:

(Effect in the field of agriculture)

कृषि के विकास में रसायनिक उर्वरकों, कीटानाशकों, शाकनाशकों इत्यादि का बढ़ता अपयोगके कारण मिट्टी तथा जलाशय प्रदुषित होते रहते है। जिसके कारण मनुष्य की मृत्युतक हो जाती हैं। बढ़ते हुये सिंचाई के कारण मिट्टी की उव्ररता हास तथा कम उपजाएँ हो जाती हैं अनेक उद्योग, विशेष कर रासायनिक उद्योगों द्वारा टैक्सिक रसायन वायुमण्डल में छोड़ी जाती है। इनका जलाशयों में

निस्सारण से जल-प्रदूषित हो जाती है जो जीवधारियो के लिए विनाशकारी होती है।

स्प्रे-डिस्पेन्सरी (Spray-cum-dispensers), शीतंडार (कोल्ड स्टोरेज), वातानुकूलनों (Air Conditioners) के द्वारा वायुमझडल में क्लोरोफ्लोरोकार्बन (Chlorofluorocarbon) गौसों के वायुमण्डलमें उत्सर्जन द्वारा ओजोन पर्त (Ozone layer) का क्षति (Depletion) होता हे। ओजोन के क्षति होत है। ओजोन के क्षति का अर्थ है सौर किरणों के अल्ट्राभाइलेट (Ultra violet solar rays) का कम आत्मासातकरना जिसके कारण भूतल के तापमान में वृद्धि होता है।

खगड़िया जिला की अर्थ-व्यवस्था प्रमुखतः कृषि ही खाद्यान्न तथा कृषि पर आधारित उद्योग-धंधे (Agro- based industries) के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराती है। लेकिन सिर्फ कृषि जन्य उद्योग-धंधे चाहे वह कितना ही प्रगतिशिल (Progressive) क्यों नो उनसे किसी क्षेत्र की आर्थिक विकास सीमित ही होती है। "Only agriculture-based production, however efficient and progressive it may be cannot carry the economy beyond a limit because of its inbuilt weakness the most important of which is the proneness of agriculture to sudden unexpected natural calamities" कृषि-उत्पादन की कीमत में ऊपर-नीचे होने की संभावना अधिक होती है, क्योंकि इसकी मात्रा के अनुरूप आपूर्ति में असंतुलन होती हैं।

अध्ययन क्षेत्र उद्योग के दृष्टिकोण से संपन्न नहीं है। यहाँ के उद्योगों के पिछड़ा हुआ होने के अनके कारण हैं। यह क्षेत्र पूर्णतः कृषि क्षेत्र है एवं यहाँ खनिजों का आभाव है; सिर्फ गंगा नदी को छोड़कर सूखी छोटी नदियों एवंज ल-स्त्रोतों की तली से बालू का खनन किया जाता है। इसी कारण से यहाँ कोई खननऔर बड़े उद्योग का अभाव है। मध्य गंगा का मैदान होने के कारण यह क्षेत्र कृषि-क्षेत्र में धनी हैं। अतः यहा मुख्यतः कृषि-आधारित उद्योगो का विकास हुआ है। इसके लिए कच्चा माल आसानी से मिल जाता है।

फिर भी खगड़िया जिला में सस्ते श्रम, पर्याप्त भूमिगत जल, उपभोक्ताओं का विस्तृत बाजार, उद्योग-धंधो के लिए कृषिजन्य कच्चे माल की पर्याप्त उपलब्धता, बिजली की बढ़ती आपूर्ति तथा विकसित यातायात के साधन, (सड़क, रेलमार्ग, जलमार्ग) के कारकों से यहाँ उद्योग-धंधों के विकास की अच्छी संभावनाएँ है।

कृषि-आधारित उद्योग-धंधों में खाद्य, एवं वनस्पति, ऑटा मिल, चावल मिल इतयादि प्रमुख है।

हमारे देश/राज्य में उद्योगों को तीन वर्गों में बाँटा जाता है- (क) वृहत उद्योग, (मध्यम उद्योग तथा) (ग) लधु उद्योग में ग्रामीण में उद्योग तथा कॉटेज उद्योग सम्मिलित हैं लधु तथा छोटे उद्योग-धंधे बहुत महत्वपूर्ण हैं विशेष कर अध्ययन क्षेत्र में। इससे समुचित बिकास, अधिक संख्या में लोगो को रोजगार तथा अधिक लोगो को लगा मिलने की संभावना रहती है। केन्द्र सरकार भी इस संबंध में राज्य सरकार को सहायता करती है।

खगड़िया जिला के पुराने लधु एवं गृह-उद्योग:

(Old small and cottage industries of Khagaria district):

फ्रांसिस बुचानन (Francis Buchanan) पे इस क्षेत्र के छोटे उद्योगों में कड़ाही, चैम्बर स्टोव (Chamber stove), रसोई घर का स्टोव, तलवार, कैची, घोड़े की नाल, ताले, कांटी, हासिया, कुदाल, घासकाटने वाला हासिया, पलंग, फर्नीचर, दुगध उद्योग (ताजा छेना बनाना) का वर्णन किया है। इसके अतिरिक्तरंगाई का कार्य, लाही का कार्य, कृषि औजारों भी बनायी जाती थी। इन्ड़ीगो का भी काम होता था।

तालिका संख्या:1

खगड़िया जिला में वर्तमान माइक्रो और लधु इन्टरप्राईजेज एण्ड आरटिजन इकाइयाँ: 2015-16

(Details of existing micro and small enterprises and Artisan units in the district of Khagaria): 2015-16

क्रमांक	उद्योग के प्रकार	इकाईयों की संख्या	लागत (लाख रू. में)	रोजगार
1	कृषि-आधारित (Agro-based)	366	1,429,99	1,554
2	रेडिमेड पोशाक तथा कास्तकारी	06	26,25	24
3	लकड़ी/लकड़ी आधारित फर्निचर	199	149,00	357
4	कागज तथा कागज-उत्पाद	06	11,21	28
5	चमड़ा आधारित उद्योग	16	12,70	22
6	रसायन/रसायन आधारित उद्योग	53	104,34	159
7	खनिजआधरित (अधातु)	42	98,20	126
8	धातु आधारित (स्टील) उद्योग	98	300,56	326
9	इंजीनियरिंग यूनिट	08	44,18	46
10	इलेक्ट्रीकल मशीनरी और परिवहन सामग्री	45	18,17	135
11	रिपेयरिंग एण्ड सर्विसिंग	40	29,00	160
12	अन्य	102	59,48	85

स्त्रोत: डी आई सी (DIC), खगड़िया।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि जिला विभिन्न तथा रोजगार के दृष्टिकोण से प्रमुख है। उद्योगों में कृषि-आधारित में इकाईयों, लागत कृषि उद्योगों में चावल की मिलें, आटा मिले, तेल की मिलें, दालमिलें, बीड़ी बनाना, आरा मशीन, गुड़ बनाना, घरेलू बर्तन बनाना, बक्सा तद्यथा सुटकेस बनाना अदि आते है। गृह उद्योगों में सूत काटना, दौड़ा बनाना, रस्सी तथा चटाई बनाना, मवई घास में रस्सी बनाना, देशी तम्बाकू बनासना, खाड़सारी, मुर्गीपालन, आता है। तथा रोजगार के दृष्टिकोण से प्रमुख है।

तालिका संख्या:2

वर्षवार पंजीकृत औद्योगिक इकाईयों का प्रारूप (Yearwise trend of registered industrial units)

क्रमांक	वर्ष	पंजीकृत इकाईयों की संख्या	लागत (लाख रू. में)	रोजगार
1	2006-07	579	1,295.85	1,737
2	2007-08	53	112.85	192
3	2008-09	36	94.48	123
4	2009-10	91	256.89	340
5	2010-11	79	196.95	390
6	2011-12	53	326.56	321
	कुल 2011-12 तक	891	2,283.61	3.022

स्रोतः डी आई सी (DIC), खगड़िया।

तालिक संख्याः 3

खगड़िया जिला में औद्योगिक स्टेट (Industrial state) कि वर्तमान अवस्थाः 2015-16

<table>
<tr><td>औद्योगिक क्षेत्र का नाम</td><td>भूमि का अधिग्रहण</td><td>विकसित भुमि</td><td>प्रति वर्ग मीटर की वर्तमान दर (रू.)</td><td>प्लौट की संख्या</td></tr>
<tr><td>औद्योगिक क्षेत्र, खगड़िया</td><td>39.78</td><td>39.78</td><td>174.45</td><td>01</td></tr>
<tr><td colspan="2">आवंटित प्लौट की संख्या</td><td>रिक्त प्लौट की संख्या</td><td colspan="2">उत्पादन में लगे इकाईयों () की संख्या</td></tr>
<tr><td colspan="2">01</td><td>01</td><td colspan="2">इकाई निर्माणधीन</td></tr>
</table>

स्रोतः डी आई सी (DIC), खगड़िया।

अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के कृषि उत्पाद पर आधारित उद्योगों के विकास के लिए संभावनाएँ अधिक हैं। फुड प्रोसेसिंग उद्योगों (food processing industries) के विकास के लिए

बिहार सरकार 2008 ई. में कॅड प्रोसेसिंग उद्योग का निदेशालय बनाना है। कृषि-आधारित उद्योगों के विकासका राज्यमें भविष्य हैं साथ ही धनी जनसंख्या के कारण यह पोत्र एक बड़ा बाजार बन सकता है।

जिला में फ्रूट एवं बैजीटेबल प्रोसेगिक उद्योग (Fruit-and Vegetable processing Industry) के विकास की संभावना अधिक हैं। इन उद्योगों में फ्रूट जुस (Fruit juice), आचार (Pickle), सुप जैम (jam)
जैली (jally) तथा मादक द्रव बाया जा सकता है। क्षेत्र में इससे संबंधित आधरभूत संरचना का अभावनहीं है। इन उद्योगो के लिए कूलिंग ग्रडिंग सेटिंग पैकिंग आदि की सुविधाओं का होना आवश्यकहोता है।आज लगभग सम्पूर्णफल और सब्जियों के उत्पाद को बाजार ले जाया जाता है। और बहुत कमही मात्रा का प्रोसेगिंग इकाई को भेजा जाता है। सुविधाओं के अभाव के कारण व्यर्थ (Wastage) की मात्रा की लगभग 33 प्रतिशत आंकी जाती है। यहाँ कृषकों को अम्ल आर्थिक लाथ मिल पाते है। जब बड़े साहुकार तथा दुकानदरों को अधिक लाथ मिल जाता है।

लघु तथा कुटीर-उद्योग एवं प्र्यावरण (Small and cottage industries and environment): इन प्रकार के उद्योगों से भी पर्यावरणीय प्रदूषण एवं अवनयन होता है।

चावल,आटा मिल्स द्वारा, मशीनों के चलने, ट्रैक्टरों एवं ट्रकों इत्यादि के द्वारा कच्चा माल इकट्ठा करने तथा तैयार माल निर्गत करने, मजूदरों के आवागमन से, वहाँ बड़ी मात्रा में ध्वनि-प्रदूषण (Sound
Pollution) उत्पन्न होता है। गुड तथा खाड़सारी उद्योग केन्द्रों के निकट काफी मात्रा में गन्ना लाने तथा गुड़ बनने के क्रम में धुल , धुआ तथा अपशिष्टों का उत्पन्न होना, दौरा तथा हस्त पंखा बनने के सथानपरबचे हूये बॉस के टुक्ड़ों, सीको के कटे भाग, होना, घरेलू एवं खेतिहर लोहे के औजार (Implements) बनने के स्थानों पर इकट्ठा किये जाने वाले लकड़ियों से आरा चलाने से लकड़ी के बुरादों के कणों से, छिलाई से काफी मात्रा में ठोस अपशिष्ट तथा ध्वनि प्रदुषण का उत्पन्न होना, तेल, पैरने, आटा चक्की, चावल कुटाई इत्यादि प्रायः शहरों व गाँवों के घने बसे क्षेत्रों से किया जाता है, वहाँ टैम्पों, ट्रैक्टरों, बैलगाड़ियों से सामान इकट्ठा करने तथा तैयार माल बाहर भेजने से बड़ी मात्रा में धूल, ध्वनि-प्रदूषण उत्पन्नहोता है, बैलगाड़ियों में लगे बैलों द्वारा गोबर, मलमूत्र से भी प्रदूषण फैलता हैं जहाँ सड़क/गली कच्ची है। वहाँ गर्मी में अत्याधिक धूल तथा वर्षाकाल में गहरी कीचड़ (Deep mud) उत्पन्न हेने से भी प्रदूषणयुक्त वातावरण हो जाता है। बीड़ी बनाने के केन्द्रों पर बीड़ी बनाने के बाद शेष कटे-छटे बीड़ी के पतों का

इधे-उधर हवा के साथ उड़ते रहते तथा कभी-कभी नालियों में जाकर मलजल प्रवाह को बाधितकरते हैं। मिठाई तथा हलवाई की दुकानों से भी इस्तेमाल किये गये खाद्यान्नों-पतो के कूड़ा (Rubbish) सड़कपर जमा होता रहता है जहाँ पर मक्खियं तथा मावारिसजानवर एवं कुतें का जमाव होता रहता है। जिससे सड़के जाम होता रहता है।

निष्कर्ष:

खगड़ियो जिला क्षेत्र कृषि-प्रधान क्षेत्र होने के कारण यहाँ मुख्यतः आधारित उद्योगधंधों को ही विकास हो पाया है। लेकिन क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के कृषि-उत्पाद पर आधारित फुड प्रोसेसिंग(प्रसंसकण) उद्योग के विकास की काफी संभावनाएँ है। क्षेत्र मेंइससे संबंधित आधारभूत सरचना का अभावनहीं है। इससे कृष्कों की आय-बृद्धि तथा समृद्धि होगी। बिहार सरकार खाद्य-प्रसंस्करण के लिए अनुदानभी दे रही है।

संदर्भ:

1. मैथ्यू, के. एम. 2010 मनोरमा इयरबुक, मलय मनोरमा, कोटयम, पृ. 639
2. डिस्ट्रिक्ट प्राईमरी सेन्सस अब्सट्रैक्ट 2011, पृ. 22
3. Gautam, Alka, 2010, environment Geography, Sharda Pustak Bhawan, Allahabad, PP.186-87.